परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण मेवाड़ में

प्रकृति के प्राङ्गण में

६ जुलाई। परम श्रद्धास्पद गुरुदेव प्रातः धानीन से करीब साढ़े सात कि.मी. का विहार कर मोजावतों का गुड़ा पधारे। यद्यपि इस गांव में अब तेरापंथ समाज के किसी परिवार का निवास नहीं है। किन्तु मेवाड़ के बड़ाला, कोठारी, मादरेचा और चोरड़िया परिवार ने आचार्यप्रवर से अपने कुलदेवता गुड़ा भैंरुजी के मंदिर प्राङ्गण में पधारने का भावपूर्ण अनुरोध किया। दयानिधान पूज्यप्रवर ने इस निवेदन को स्वीकार कर उनकी भावना को साकार किया। लौकिक और लोकोत्तर दोनों तीर्थों के संगम में स्वयं को स्नात बनाकर चारों परिवार अतिशय प्रफुल्लित, पुलकित और प्रमुदित थे।

पहाड़ पर अवास्थित इस मंदिर परिसर को हरितिमा लिए हुए गहरी खाईयों ने चारों ओर से घेर रखा है। ठंडी बहार आंगतुकों को प्रकृति के प्राङ्गण में होने का स्पष्ट अहसास करा रही थी। खाईयों के उस पार खड़े विशाल और हरे भरे वृक्षों से परिपूर्ण पहाड़ों के रमणीय दृश्यों को अपने भीतर समेटे यह सुरम्य परिसर 'पिकनिक स्पॉट, हिल स्टेशन' आदि नामों से विख्यात है। आचार्यवर के पादार्पण से चारों परिवारों के अतिरिक्त अन्य श्रद्धालुओं ने भी सैंकड़ो की संख्या में पहुंचकर दर्शन-उपासना के साथ-साथ रमणीय स्थान में स्वयं को तरोताजा बनाया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मंत्री मुनि श्री ने उपस्थित जनसमूह के सम्बोधित किया। साध्वी चारित्रयशाजी और साध्वी कार्तिकयशाजी ने मधुर संगान प्रस्तुत किया। मंदिर से सम्बद्ध परिवारों की ओर से कन्याओं, महिलाओं और सुशील बड़ाला ने भावाभिव्यक्ति दी। श्री महेन्द्र कर्णावट ने पूज्य प्रवर की मेवाड़ यात्रा के संदर्भ में विचार व्यक्त किए।

परम पावन आचार्यप्रवर ने जीवनशैली को उपशम प्रधान बनाने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने जनता को तपस्या हेतु प्रेरित करते हुए कहा--चतुर्मास का समय निकट आ रहा है। चतुर्मास में तपस्या की झड़ी जैसी लग जाती है। अनेक लोग मासखमण और उससे अधिक दिनों की भी तपस्या कर लेते हैं। मैं उन तपस्वियों को साधुवाद देता हूं। मुख्यनियोजिकाजी भी तपस्विनी-सी बन रही है। ये वर्ष में अनेक तेले कर लेती हैं, उपवास करना तो इनके लिए सामान्य बात है। तपस्या के साथ विहार, ज्ञान की आराधना और संघ की व्यवस्था संबंधी सेवा भी करती है, यह बहुत अच्छी और अनुमोदनीय बात है। हमारे श्रावक-श्राविकाएं चतुर्मास में यथाशक्ति ज्ञान, दर्शन और बारहव्रतों की साधना तथा तपस्या की आराधना करें।

आचार्यप्रवर ने चारों परिवारों को मध्याह्न में सेवा का अवसर प्रदान कर उन्हें धार्मिक प्रेरणा दी। सायंकालीन आहार के पश्चात पूज्यप्रवर ने मंदिर और परिसर का अवलोकन करते हुए प्रकृति की मनोहर छटा पर भी दृष्टिपात किया। सूर्यास्त के समय हल्की बूंदाबांदी ने वातावरण की मनोहरता को द्विगुणित बना दिया।

पड़ासली में खुशहाली

७ जुलाई। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः करीब साढ़े तीन कि.मी. का विहार करते हुए द्विदिवसीस प्रवास हेतु पड़ासली पधारे। आराध्य के स्वागत में स्थानीय श्रद्धालुओं में श्रद्धा का ज्वार-सा उमड़ रहा था। अपने गांव में अपने प्रभु के चरणों में शीष नवाकर लोग परम धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। सर्वत्र खुशहाली ही खुशहाली नयनों का विषय बन रही थी। पूज्यप्रवर भव्य स्वागत जुलूस के मध्य स्थानीय तेरापंथ भवन में चरण स्पर्श करते हुए राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। दो दिनों का प्रवास यहीं रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व महाश्रमणीजी, मुख्यनियोजिकाजी और मंत्री मुनिश्री के प्रेरक अभिभाषण हुए। अणुव्रत प्रभारी मुनिश्री सुखलालजी ने अहिंसा यात्रा के असाम्प्रदायिक

वातावरण के संदर्भ में विचार व्यक्त किए। मुम्बई से समागत सैयद सफी वसन ने अपने वक्तव्य में आचार्यवर के उदार दृष्टिकोण को आदर्श बताया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने पूर्व निर्धारित विषय 'आओ हम जीना सीखें' विषय पर आधारित अपने पावन प्रवचन में कलापूर्ण जीवन के सूत्रों का प्रतिबोध प्रदान किया। आचार्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात श्री धर्मचन्दजी बड़ाला और श्री रोशनलालजी बड़ाला ने सपत्नी शीलव्रत स्वीकार किया कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

८ जुलाई। पड़ासली प्रवास का द्वितीय दिन। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः सभी श्रद्धालुओं के घरों को चरण स्पर्श से पावन किया। प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर से पूर्व मंत्री मुनि सुमेरमलजी ने जनसमूह को संबोधित किया।

परम श्रद्धास्पद गुरुदेव ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्रत आत्मा का सुरक्षा कवच होता है। न केवल इस जीवन के लिए अपितु अग्रिम गति को अच्छा बनाने के लिए भी त्याग चेतना का विकास अपेक्षित है। बारहव्रत गृहस्थ जीवन की बड़ी संपदा होती है। श्रावक-श्राविकाएं उसे गहराई से समझकर जीवनगत बनाने का प्रयास करें तो उनकी आत्मा उत्थान की दिशा में आगे बढ़ सकेगी।'

आचार्यप्रवर के प्रवचन के पश्चात श्री नानालालजी और श्री धर्मचन्दजी ने सपत्नी शीलव्रत स्वीकार किया। स्थानीय कन्यामंडल ने संकल्पों के द्वारा अपने आराध्य का अभिनन्दन किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने परिसंवाद के माध्यम से बालसुलभ भावनाओं को प्रस्तुति दी। रात्रि में कवि सम्मेलन की समायोजना की गई। देश के विभिन्न प्रान्तों से समागत कवियों ने अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम से पूर्व सभी कवि आचार्यवर के उपपात में पहुंचे और पथदर्शन प्राप्त किया।

पूज्यप्रवर के द्विदिवसीय पड़ासली प्रवास में गांव में उत्सव का माहौल बना रहा। मुम्बई आदि क्षेत्रों में प्रवास करने वाले स्थानीय श्रद्धालुओं ने अपने घर खोलकर इस धर्मगंगा में स्वयं को पावन बनाया। पूज्यप्रवर ने उन्हें दोनों दिन पारिवारिक सेवा का अवसर प्रदान किया। आचार्यप्रवर की पुनीत प्रेरणा से लोगों ने विभिन्न संकल्प स्वीकार किए। प्रवास के द्वितीय दिन घटों तक चलने वाली रिमझिम बारिश ने वातावरण में शीतलता को प्रतिष्ठापित कर दिया। इस कारण रात्रिशयन कमरों के भीतर ही किया गया।

ठाकुर मोखमसिंहजी के परिवार के बीच

९ जुलाई। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः पड़ासली से साढ़े छह कि.मी. का विहार कर केलवा से कुछ दूरी पर स्थित ठाकुर श्री हरिसिंहजी के लालगढ़ नामक आवास पर पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। शांतिदूत आचार्यप्रवर को अपने आंगन मे पाकर ठाकुर मोखमसिंहजी का यह परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। उल्लेखनीय है कि तेरापंथ की स्थापना के बाद प्रथम दिन आचार्य भिक्षु ने केलवा राजभवन में प्रथम गोचरी की। वहां के शासक ठाकुर मोखमसिंहजी को प्रथम दान का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कालान्तर में ठाकुर मोखमसिंहजी में स्वामीजी के प्रति आस्था दृढ़तर होती गई। आचार्य भिक्षु के उस चतुर्मास में वे प्रतिदिन प्रवचन श्रवण के लिए आया करते।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनि और मुनि किशनलालजी ने जनता को संबोधित किया। ठाकुर देवीसिंहजी और ओंकरसिंहजी ने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। केलवा तेरापंथ कन्या मंडल ने आचार्यवर की अभ्यर्थना में गीत का संगान किया। तेरापंथ युवक परिषद केलवा के अध्यक्ष श्रीविकास कोठारी ने अपनी नवमनोनीत कार्यकारिणी की घोषणा की और ठाकुर हरिसिंहजी ने उन्हें शपथ दिलाई।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगलप्रवचन में कषाय मंदीकरण की प्रेरणा प्रदान की और तेयुप के सदस्यों को पाथेय प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--केलवा में संघ का चतुर्मास होने जा रहा है। १६० वर्षों बाद यह महत्त्वपूर्ण अवसर उपलब्ध हुआ है। तेयुप के सभी सदस्यों में आध्यात्मिक उत्साह बना रहे और वे नशामुक्त रहते हुए अच्छा काम करते रहें।

मध्याह्न में राज परिवार को आचार्यप्रवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर ने इस दौरान सभी परिजनों को आध्यात्मिक संबोध प्रदान किया।

www.terapanthinfo.com

१६० वर्षों बाद तेरापंथ की जन्मभूमि में भव्य चातुर्मासिक प्रवेश

१० जुलाई। आखिर वह क्षण आ ही गया, जिसकी तेरापंथ की जन्मभूमि केलवावासियों को चिरकाल से प्रतीक्षा थी। तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने जैसे ही लालगढ़ से केलवा की ओर प्रस्थान किया, जनता का सैलाब उमड़ पड़ा। मेवाड़ के प्रत्येक श्रद्धालु की आन्तरिक भावना मानों आज साकार रूप ले रही थी। हर कोई अपने आराध्य का अभिनंदन और वर्धापन करने हेतु समुत्सुक था। चारों ओर हर्ष, उत्साह, उल्लास और उमंग का पारावार लहरा रहा था।

स्वागत जुलूस के प्रारम्भ में अहिंसा रथ सुमधुर ध्वनि तरंगों को प्रसारित करता हुआ गतिमान था। उसके पीछे ज्ञानशाला के नन्हे-मुन्हे बच्चे, कन्यामंडल व मंडल की सदस्याएं और जैन ध्वज थामे राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी बुलन्द जयघोषों से वातावरण गुंजायमान बनाए हुए थे। पुलिस बैण्ड और द्वारकाधीश मंदिर कांकरोली का बैण्ड मंगल धुनों से शान्तिदूत के चरणों में अपनी अभिवंदना समर्पित कर रहे थे। तेरापंथ के उद्भव और इतिहास से जुड़ी अनेक घटनाओं को नयनाभिराम प्रस्तुति देने वाली झांकियां दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रही थी। महाश्रमणी, मुख्यनियोजिकाजी आदि साध्वीवृंद पूज्यप्रवर के आगे-आगे गतिमान बनी हुई थी। जैन ध्वज के पीछे धीर-गंभीर कदमों से गतिमान जन-जन के आराध्य महातपस्वी आचार्यवर अपने दोनों करकमलों से दर्शनार्थियों पर आशीष की वृष्टि कर रहे थे। कतारबद्ध विश ाल साधु समुदाय अपने गुरु के पदचिन्हों का अनुगमन कर रहा था। हजारों की संख्या में उपस्थित पुरुष वर्ग का जोश शिखरों को छू रहा था। स्वागत जुलूस के दोनों ओर खड़े हजारों लोग महातपस्वी आचार्यवर के दर्शन कर अहोभाव का अनुभव कर रहे थे।

आचार्यवर के स्वागत हेतु गांव के प्रत्येक समाज का प्रत्येक व्यक्ति आतुर था। जनाकीर्ण बनी हुई गलियों में गांव के विभिन्न वर्गों द्वारा स्वागत द्वार स्थापित किए हुए थे। उन द्वारों के आस-पास बड़ी संख्या में सम्बद्ध समाज के लोगों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। छोटा रावला के परिपार्श्व में सुशिक्षित जातिमान घोड़ों और बन्दूक की ११ गोलियों द्वारा सलामी देकर राजपरिवार ने अपने कुल की परम्परानुसार आचार्यवर का गरिमामय स्वागत किया। इसके अतिरिक्त राजपुरोहित, गुर्जर, मुस्लिम, घाणीवाल, सुथार, पालीवाल, नायक, सालवी नट, रेगर, खटीक, वालमिकी, पारीख, राव, पटवा, कामड़, बार्बर, स्वर्णकार, प्रजापत, भोई, सेन, बंजारा, शर्मा, गाडोलिया लुहार, हरिजन आदि विभिन्न समाज के लोगों ने पूज्यचरण को हृदय की अनंत शुभकामनाएं अर्पित कीं।

स्वागत जुलूस के मध्य आचार्यप्रवर श्री रमेश जुगराज नाहर परिवार के नवनिर्मित आवास पर पधारे। साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वीवृंद का चातुर्मासिक प्रवास यहीं निर्धारित है। अपने चातुर्मास स्थल में साध्वीवृंद ने पूज्यवर से मंगलपाठ श्रवण किया। आचार्यप्रवर ने साध्वियों के सुखद प्रवास की शुभाशंसा अभिव्यक्त की।

सबकी श्रद्धा, भक्ति और मंगलभावनाओं को स्वीकार करते हुए पूज्यप्रवर के चरण ज्यों-ज्यों महाप्रज्ञ भवन के निकटतर बनते जा रहे थे, त्यों-त्यों जनप्रवाह और उसमें हिलोरें लेता उत्साह और उल्लास अमाप्य बनता जा रहा था। आचार्यवर ने अपनी धवलवाहिनी के साथ ६ बजकर ५५ मिनिट पर नवनिर्मित महाप्रज्ञ भवन में मंगलमय प्रवेश किया। इससे पूर्व श्रीमती बिन्दिया रोशनलाल सांखला ने पूज्यप्रवर से मंगल पाठ का श्रवण कर इस भवन को लोकार्पित किया।

आचार्य भिक्षु के आसन पर

परम श्रद्धेय आचार्यवर जुलूस के मध्य अंधेरी ओरी में पधारे। तेरापंथ की स्थापना भूमि और आचार्य भिक्षु की प्रथम चतुर्मासस्थली में तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता को देखकर जन-जन पुलकित और प्रफुल्लित था। पूज्यवर चन्द्रप्रभु मंदिर का अवलोकन कर उस चौकी पर विराजमान हुए, जिस चौकी पर मंदिर के यक्षराज ने तेरापंथ के आचार्य को ही बैठने की स्वीकृति प्रदान की थी। आचार्य भिक्षु के आसन पर विराजित तेरापंथ के ग्यारहवें गादीश्वर ने यहां मंगल पाठ सुनाकर अंधेरी ओरी का अवलोकन भी किया। स्वागत समारोह में उमड़ा मेवाड़

खचाखच भरे विशाल तेरापंथ समवसरण में चातुर्मासिक मंगल प्रवेश पर समायोजित स्वागत समारोह

का प्रारंभ पूज्यप्रवर के मंगल मंत्रोच्चारण से हुआ। तत्पश्चात् श्री रमेश जुगराज बोहरा परिवार द्वारा मंच के पीछे बनी अंधेरी ओरी की सुन्दर प्रतिकृति का लोकार्पण किया गया। स्थानीय महिला मंडल के मंगल संगान के पश्चात् आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कोठारी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री संपतलाल मादरेचा, महामंत्री श्री सुरेन्द्र कोठारी, स्वागताध्यक्ष श्री परमेश्वर बोहरा, मंत्री श्री लवेश मादरेचा, स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री बाबूलाल कोठारी, श्री राजेन्द्र कोठारी, केलवा मित्र मंडल के अध्यक्ष श्री प्रकाश सिंघवी ने अपने आराध्य का अपने गांव में आस्थासिक्त अभिनंदन किया। स्थानीय सरपंच श्री दिग्विजयसिंह राठौड़ और ठाकुर मोखमसिंहजी की ग्यारहवीं पीढ़ी के ठाकुर श्री देवीसिंह राठौड़ एवं ठाकुर हरिओमसिंह राठौड़ ने पूज्यप्रवर के केलवा आगमन पर स्वागत किया। सम्पूर्ण गांव की ओर से गणमान्य महानुभावों ने आचार्यवर को अभिनंदन पत्र समर्पित किया।

राजसमंद विधायक भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती किरण माहेश्वरी ने कहा--आचार्य श्री ने आचार्य बनते ही केलवा को अपना पहला चौमासा प्रदान किया, यह हम क्षेत्रवासियों का परम सौभाग्य है। आपने मेवाड़ के छोटे-छोटे क्षेत्रों में अतिशय परिश्रम किया है, इससे तेरापंथ एवं जैन समाज ही नहीं, अपितु सभी वर्गों के लोग लाभान्वित हुए हैं। मैं इस क्षेत्र की जन प्रतिनिधि होने के नाते यह कामना करती हूं कि यह चातुर्मास ऐतिहासिक बने।

केलवा ठिकाना का प्रतिनिधित्व करते हुए ठाकुर श्री हरिओमसिंहजी राठौड़ ने कहा--'तेरापंथ के उद्गम के समय से ही राजपरिवार का तेरापंथ के साथ आत्मीय संबंध रहा है, यह हमारे परिवार का अहोभाग्य है। मैं पूरे राज परिवार की ओर से आपका स्वागत करता हूं।'

महाराष्ट्र के उत्पाद शुल्क व पर्यावरण मंत्री श्री गणेश नाईक ने कहा--'आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ ने अनेक अवदानों द्वारा मानवजाति के उत्थान का भगीरथ प्रयास किया। आचार्य महाश्रमण उसी परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। महाराष्ट्र के मंत्री के नाते मैं सम्पूर्ण महाराष्ट्र की ओर से आपको मुम्बई-महाराष्ट्र पधारने का अनुरोध करता हूं।

राजसमंद के सांसद श्री गोपालसिंह शेखावत ने कहा--'मैं आचार्य तुलसी से दीक्षित तेरापंथी हूं। उनके साधनामय जीवन से मैं बहुत प्रभावित हुआ। महाश्रमणजी एक महान समाज सुधारक एवं आध्यात्मिक विभूति हैं। मैं देखता हूं कि आचार्य महाश्रमण में तुलसी-महाप्रज्ञ संक्रान्त हैं।'

केन्द्रीय भूतल परिवहन व राजमार्ग मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी ने कहा--'आचार्य महाश्रमण द्वारा प्रदत्त नैतिक संदेश सबके लिए हितकारी व कल्याणकारी है। आप जैसे संत मार्गदर्शक बनकर देश के आध्यात्मिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। आपके इस केलवा प्रवास से सबको नया सम्बोध प्राप्त होगा।'

ठाणे (महाराष्ट्र) के सांसद डॉ. संजीव नाइक ने केलवा तेरापंथ समाज को एक एंबुलेंस समर्पित करते हुए चाबी का प्रतीक केलवा समाज के प्रतिनिधियों को भेंट किया।

जिला प्रमुख श्री किशनलाल गमेती, पूर्व जिला प्रमुख श्री हरिसिंह राठौड़, कांग्रेस जिला अध्यक्ष श्री देवकीनंदन गुर्जर 'काका', राजसमंद नगरपालिकाध्यक्ष आशा पालीवाल, नाथद्वारा नगरपालिकाध्यक्ष गीता शर्मा, थानाधिकारी श्री शर्मा आदि महानुभावों ने भी पूज्यचरण में अपनी मौन भावांजलि समर्पित की।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने कहा--'आचार्यवर के चातुर्मास प्रवेश पर उत्साह का समंदर लहरा रहा है। केलवा वह पवित्र भूमि है, जहां से क्रांति का संदेश पूरे विश्व में प्रसारित हुआ। यह वह तपोभूमि है, जहां से निकले प्रकंपनों ने सबको प्रभावित किया। आचार्यवर के इस पावस में जन-जन को पावन पथदर्शन प्राप्त हो सकेगा।

मंत्री मुनि सुमेरमलजी स्वामी ने कहा--'आचार्य भिक्षु ने केलवा की इस धरती पर वज्र संकल्प स्वीकार किया। पवित्र मार्ग पर उनके चरण चले। आचार्यवर के इस चातुर्मास को माध्यम बनाकर श्रावक-श्राविकाएं जैन दर्शन एवं तेरापंथ दर्शन के प्रवक्ता बनें तो बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। आचार्यवर के पवित्र आभामंडल में सबको त्राण मिले। मंगल प्रवेश मंगलकारी बने।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने कहा--आज केलवा प्रवेश को देखकर तैंयालीस वर्ष पूर्व

आचार्य श्री तुलसी के कन्याकुमारी पदार्पण की स्मृति हो आई। उस यात्रा में गुरुदेव ने तीन सागर के संगम पर आसीन होकर पूरे विश्व को मानवता का संदेश दिया था। आज केलवा प्रवेश पर भी तीन सागर का संगम दृष्टिगोचर हुआ--जनता का पारावार, जनता के दिलों में उमड़ रहा श्रद्धा का दरिया तथा मंच पर विराजमान करुणा के महासागर। महाश्रमणीजी ने आगे कहा--जापान सूर्य का देश है। सबसे पहले सूर्य वहां उदित होता है। तेरापंथ का सूर्य केलवा अंधेरी ओरी में उदित हुआ और आज वह पूरे संसार को आलोकित कर रहा है।'

गुरुवचन निभाने आया हूं केलवा

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'भौतिक दुनिया में अनेक पदार्थों को मंगल माना जाता है। पर धर्म से बढ़कर कोई मंगल नहीं होता, वह उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा संयम व तप धर्म है। जिसके जीवन में धर्म है, उसके चरणों में मनुष्य ही नहीं देवता भी प्रणत होते हैं।

आचार्यवर ने आगे कहा--'धर्म की साधना करते-करते और धर्मोपदेश देते-देते आज मैं ससंघ केलवा आया हूं, परम पूज्य स्वामीजी के क्षेत्र में आया हूं। प्रवास स्थल आने से पूर्व मैं विशाल जुलूस के मध्य अंधेरी ओरी गया। आचार्य भिक्षु ने वहां अपनी साधना से आलोक प्रस्फुटित किया था। तत्रस्थ चन्द्रप्रभु भगवान के मंदिर के बाहर निर्मित दो चबूतरों में से एक पर मैं बैठा। कहा जाता है कि आचार्य भिक्षु उस पर विराजते थे और उनके उत्तराधिकारियों को ही वहां बैठने का अधिकार है।'

केलवा चतुर्मास के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'यह चातुर्मास मैं मेरा मानूं या आचार्य महाप्रज्ञजी का। स्वास्थ्य आदि कारणों से गुरुदेव का पूर्व निर्णीत चतुर्मास केलवा नहीं हो सका। गुरुदेव के महाप्रयाण के बाद मैंने उनकी अवशिष्ट यात्रा को पूरा करने का निर्णय लिया और आज केलवा में चातुर्मासिक प्रवेश किया है। मैं गुरुवचन को पूरा करने और स्थूलभाषा में कहूं तो गुरु का ऋण चुकाने यहां आया हूं। मेरे साथ विशाल साधु-साध्वी समुदाय है। केलवा के सभी वर्गों ने मेरा स्वागत किया, यह मैं उनकी सहृदयता मानता हूं। तेरापंथ की जन्मभूमि में आकर मैं प्रसन्न हूं।'

केलवा ठिकाने के साथ तेरापंथ के आत्मीय संबंधो की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'केलवा का राजपरिवार शालीन है। आचार्य भिक्षु ने ठाकुर मोखमसिंहजी के हाथ से राजमहल में प्रथम गोचरी ग्रहण कर इतिहास का सृजन किया। मेरी भी इच्छा है कि मैं भी राजपरिवार में गोचरी करके उस इतिहास की पुनरावृत्ति करूं।'

द्वितीय आचार्य भारमलजी स्वामी के बाद केलवा में आचार्यों के चातुर्मास न होने के संदर्भ में प्रश्न उपस्थित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'आचार्य भारमलजी स्वामी के बाद मैं यहां चतुर्मास करने आया हूं। इस बीच १६० वर्षों के प्रलंबकाल में आचार्यों ने चतुर्मास क्यों नहीं किए? मंत्री मुनि आदि इतिहासविज्ञ शोधपूर्वक इस का समाधान खोजकर बताएं।

अहिंसा यात्रा की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मैं चाहता हूं सम्पूर्ण केलवा नशामुक्त बने। इस दृष्टि से इस चतुर्मास में नशामुक्ति अभियान सघनता के साथ गतिमान रहे। यह जनकल्याण का कार्य है। यह अभियान केलवा चतुर्मास की एक बड़ी उपलब्धि हो सकेगी।' आचार्यवर ने आचार्य भिक्षु का पावन स्मरण करते हुए श्रीमज्जयाचार्य द्वारा रचित 'भिक्षु म्हारै प्रगट्या जी भरत खेतर में...' गीत का संगान किया।

कार्यक्रम में समागत अतिथियों को साहित्य एवं स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी एवं श्री ओम आचार्य ने किया।

अणुव्रत मित्र पुरस्कार समर्पण समारोह

आज मध्याह्न में पूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि में महाराष्ट्र के पर्यावरण मंत्री श्री गणेश नाइक को जैन विश्व भारती द्वारा अणुव्रत मित्र पुरस्कार समर्पित किया गया। जैविभा अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चौरड़िया, मुख्य न्यासी श्री रणजीत कोठारी ने अपनी भावाभिव्यक्ति के साथ स्मृतिचिन्ह, प्रशस्तिपत्र

www.terapanthinfo.com

व पुरस्कार राशि अढ़ाई लाख का चेक प्रदान किया। प्रशस्तिपत्र का वाचन जैविभा के सहमंत्री श्री विजयसिंह चौरड़िया ने किया।

मुनि सुखलालजी, मुनि किशनलालजी, मुनि रजनीशकुमारजी ने श्री नाइक की तेरापंथ और उसके अवदानों के प्रति निष्ठा को श्लाघनीय बताया। अभातेयुप के महामंत्री श्री रमेश सुतरिया, श्री सुरेन्द्र कोठारी, नवी मुम्बई शिक्षा समिति सदस्य श्री अर्जुन सिंघवी, श्री ओम आचार्य, श्री शशिकांत विराजदार, श्री लादूलाल श्रीमाल एवं ठाणे के सांसद श्री संजीव नाइक ने श्री गणेश नाइक की सेवाओं का उल्लेख किया। श्री गणेश नाइक ने कहा--मुझ पर आचार्यजी की जो कृपा है, वही मेरे लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है। श्री नाईक ने आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए पुरस्कार में प्राप्त राशि जैन विश्व भारती को लौटा दी।

आचार्यवर ने कहा--'जैन विश्व भारती' शिक्षा, साधना, सेवा, साहित्य के क्षेत्र में कार्य करने वाली महत्त्वपूर्ण संस्था है। आज इस संस्था द्वारा श्रीगणेश नाइक को अणुव्रत मित्र पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस सम्मान से भी वह सम्मान बड़ा था, जब आचार्य महाप्रज्ञ ने इन्हें 'कल्याणमित्र राजनेता' के रूप में सम्बोधित किया। जैविभा द्वारा प्रदत्त सम्मान को स्वीकार करके इन्होंने अर्थ को लौटा दिया। धन का त्याग करना बड़ी बात होती है। श्री नाइकजी अहिंसा, अणुव्रत, जीवन विज्ञान आदि कार्यों को आगे बढ़ाते रहें। इनके सुपुत्र सांसद संजीव नाइक अपने साथी सांसदों के बीच अणुव्रत आदि की चर्चा करते रहें।' कार्यक्रम का संचालन मुम्बई से समागत श्री चिमन सिंघवी ने किया।

मेवाड़ यात्रा : उल्लेखनीय तथ्य

परमाराध्य आचार्यवर की मेवाड़ यात्रा अतिशय प्रभावक और आह्लादोत्पादक रही। पूज्य प्रवर ने सरदारशहर चतुर्मास के पश्चात राजलदेसर तक ४०६ कि.मी. और राजलदेसर से केलवा तक ११२६ किमी. यात्रा की। इस प्रकार कुल यात्रा १५३२ कि.मी. की हो गई। राजलदेसर से केलवा तक १५७ दिनों में १२८ दिन विहार और २९ दिन प्रवास हुआ। इस यात्रा के उल्लेखनीय तथ्य अग्रांकित बिन्दुओं में प्रस्तुत है--

- आचार्य पदाभिषेक समारोह के ऐतिहासिक एवं गरिमापूर्ण अवसर पर सरदारशहर में परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमण ने अपने पावन उद्बोधन में मेवाड़ व मारवाड़ यात्रा की मंगल उद्घोषणा की। आचार्यवर ने इसे आचार्य महाप्रज्ञ की अवशिष्ट यात्रा के रूप में स्वीकार कर 'अहिंसा यात्रा' से अभिहित किया।
- महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के विशेष निवेदन पर परम पूज्य आचार्यवर के ५० वें वर्ष के संदर्भ में 'आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव' की उद्घोषणा हुई। महाश्रमणीजी के मार्गदर्शन में इसकी समग्र रूपरेखा सुनिश्चित हुई। अहिंसा यात्रा के साथ आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव का प्रसंग सोने में सुहागा बना और एक अपूर्व उल्लास का वातावरण निर्मित हुआ।
- पूज्यप्रवर ने सरदार ाहर चातुर्मास के बाद 'तीर्थयात्रा' के रूप में यात्रा प्रारंभ की। इसके अंतर्गत श्रीडूंगरगढ़, उदासर, बीकानेर, गंगाशहर, देशनोक, नोखामंडी, बीदासर, छापर, पड़िहारा होते हुए वर्धमान महोत्सव रतनगढ़ में संपन्न कर पूज्यप्रवर १४७ वें मर्यादा महोत्सव हेतु राजलदेसर पधारे। इस यात्रा में अपने गुरु की इस महान कृपावृष्टि में स्नात वृद्ध साधु-साध्वियों ने नवोदित आचार्य के पादाम्बुज में अपनी अभ्यर्थना समर्पित कर कृतार्थता का अनुभव किया। आचार्यवर ने सबकी सारणा-वारणा की।
- राजलदेसर मर्यादा महोत्सव अत्यन्त प्रभावक एवं सफल रहा। इस अवसर पर आचार्यवर ने अपने दीक्षाप्रदाता मुनि सुमेरमलजी (लाडनूं) को 'मंत्री मुनि' के रूप में मनोनीत किया। राजलदेसर से १४ फरवरी की मंगल वेला में अहिंसा यात्रा का शंखनाद करते हुए पूज्यप्रवर अपनी विशाल धवल सेना के साथ मेवाड़ की ओर गतिमान हुए।

www.terapanthinfo.com

- पड़िहारा, छापर, सुजानगढ़ में एकदिवसीय प्रवास के पश्चात पूज्यप्रवर त्रिदिवसीय प्रवास हेतु लाडनूं पधारे। प्रवास के प्रथम दिन ही आचार्यप्रवर द्वारा लाडनूं को तेरापंथ की राजधानी घोषित करना लाडनूंवासियों के लिए अतिशय आह्लादकारी रहा। इस अतिव्यस्त प्रवास में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, आचार्य तुलसी महिला शिक्षा केन्द्र तथा आचार्य महाप्रज्ञ केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के लोकार्पण के साथ राज्यपाल डॉ. शिवराज पाटिल के विशेष उपस्थिति में जैविभा विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह की गरिमापूर्ण आयोजना की गई। इसके अतिरिक्त भी इस प्रवास में अनेकानेक कार्यक्रम समायोजित हुए। पारमार्थिक शिक्षण संस्था अमृतायन-जैविभा परिसर में स्थानांतरित हुई। सम्पूर्ण प्रवास में अच्छी रौनक रही।
- लाडनूं प्रवास के पश्चात आचार्यप्रवर छोटी खाटू, बोरावड़ में धार्मिक अलख जगाते हुए ६ मार्च को किशनगढ़ पधारे। यहां राजलदेसरवासियों ने यात्रा व्यवस्था का दायित्व सिसोदा व रीछेड़वासियों को संयुक्त रूप से सौंपा। इस अवसर पर हजारों की संख्या में मेवाड़ के निवासी व प्रवासी श्रद्धालु उपस्थित हुए। तत्पश्चात अजमेर की विश्व प्रसिद्ध दरगाह में आचार्यवर का पावन पादार्पण हुआ। पूज्यप्रवर ने वहां से विश्व के नाम अहिंसा का संदेश प्रदान किया।
- आचार्यप्रवर १६ मार्च को खारी नदी के तट पर अवस्थित मेवाड़ की सीमा में प्रविष्ट हुए। वहां मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों से समागत श्रद्धालुओं ने अपने आराध्य का आस्थासिक्त स्वागत किया।
- लाछुड़ा में आयोजित मेवाड़ स्तरीय स्वागत समारोह में मेवाड़ी भक्तों की विशाल उपस्थिति अपने गुरु के प्रति उनकी आंतरिक भक्ति और समपर्ण भावना की परिचायक थी। इस भव्य समारोह में सैंकड़ों क्षेत्रों से हजारों श्रद्धालुओं ने शिरकत की। पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे और अनेक विशिष्ट महानुभावों ने भी महातपस्वी आचार्यवर को मेवाड़ी धरती पर वर्धापित किया। 'मुझे सात्विक संतोष और प्रसन्नता है कि मैं मेवाड़ आ गया और मेरे मेवाड़ी श्रावकों के सामने बैठा हूं।' आचार्यवर के इस मार्मिक वाक्य ने पंडाल में उपस्थित श्रोताओं को अभिभूत कर दिया।
- तेरापंथ के इकरंगे क्षेत्र शिशोदा में महावीर जयंती का कार्यक्रम बड़ा ही प्रभावी रहा। इस कार्यक्रम में छत्तीस ही कोमों व आस पास की भागलों-ढ़णियों के लोग हजारों की संख्या में संभागी बने।
- कोशीवाड़ा में जन प्रतिनिधि सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन हुआ। इसमें राजसमंद जिले की सात पंचायत समितियों के कुल २०४ सदस्यों में से १६१ सदस्यों ने भाग लिया। इस प्रकार का जिला स्तरीय वृहद् सम्मेलन संभवतः पहली बार हुआ।
- कुंचोली और दोवास के बीच रोंगटे खड़े करने वाली मधुमक्खियों के आक्रमण की घटना स्मृति पटल पर सदैव अंकित रहेगी।
- इतिहास प्रसिद्ध कुंभलगढ़ ऐतिहासिक यात्रा स्मरणीय बन गई। आचार्यवर ने अपनी धवल सेना के साथ उस ऐतिहासिक दुर्ग का अवलोकन किया।
- मजेरा में आचार्य महाप्रज्ञ की प्रथम पुण्य वार्षिकी पर आयोजित कार्यक्रम में गांववासियों की विशाल उपस्थिति, बड़ी संख्या में विशिष्ट प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियों का आगमन यादगार प्रसंग बन गए।
- रींछेड़ में अक्षय तृतीया के गरिमामय आयोजन के साथ छह दिवसीय प्रवास अत्यन्त प्रभावी रहा। शिशोदा व रींछेड़ की संयुक्त व्यवस्था के बाद आचार्यश्री महाश्रमण चतुर्मास व्यवस्था समिति, केलवा ने व्यवस्था का दायित्व संभाला।
- कांकरोली में आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव का भव्य शुभारंभ हुआ। भारत गणराज्य की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल, राजस्थान के राज्यपाल डॉ. शिवराज पाटिल, केन्द्रीय मंत्री डा. सी.पी.जोशी आदि अतिविशिष्ट महानुभावों की मौजूदगी में आचार्यवर के व्यक्तित्व एंव कर्तृत्व को विविध कोणों से प्रस्तुति दी गई। देश के विभिन्न प्रांतों से समागत हजारों श्रद्धालुओं ने अपने आस्थान को अपनी भावांजलि समर्पित की। इस अवसर पर डायलिसिस सेन्टर का उद्घाटन, विशाल निःशुल्क चिकित्सा

शिविर आदि विविध उपक्रमों के साथ श्री रमेश कोठारी द्वारा प्रस्तुत आचार्य महाश्रमण फोटो गैलेरी में प्रदर्शित आचार्यवर के जीवन्त चित्र भी जनता के आकर्षण का केन्द्र बने रहे। मुम्बई और हरियाणा से समागत स्पेशल ट्रेन इस आयोजन के उल्लेखनीय तथ्यों में से एक है।

- राजनगर स्थित गांधी सेवा सदन में आचार्य पदाभिषेक के एक वर्ष की सम्पन्नता के अवसर पर अभ्यर्थना का कार्यक्रम गरिमापूर्ण रहा।
- उदयपुर के चार दिवसीय प्रवास में आचार्यवर का शारीरिक श्रम अत्यधिक रहा। सर्वधर्म सम्मेलन, आचार्य महाप्रज्ञ स्मृति व्याख्यानमाला का शुभारंभ, न्याय और अणुव्रत विषय पर न्यायाधीशों और वकीलों की संगोष्ठी, कुटुम्ब नाटिका का मंचन आदि अनेकानेक कार्यक्रम समायोजित हुए।
- पेसिफिक युनिवर्सिटी ने आचार्यवर को 'शांतिदूत' अलंकरण समर्पित कर अहिंसा और सदाचार के प्रति अपनी संकल्पबद्धता व्यक्त की।
- उदयपुर से मगरा क्षेत्र की संघ प्रभावक यात्रा के पश्चात आत्मा में आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस, चारभुजा में कन्या अधिवेशन, संबोधि उपवन में आचार्य महाप्रज्ञ जन्म दिवस कार्यक्रम के प्रभावी समायोजन हुआ।
- मेवाड़ी भूभाग में होने वाली आचार्यवर की यह यात्रा रोमांचकारी और आनंदपूर्ण रही। आरोह और अवरोह से युक्त उबड़-खाबड़ पहाड़ी पगडंडियों पर चलना अनेक साधु-साध्वियों के लिए अपूर्व अनुभव था। इस वन्य प्रदेश में अवस्थित अरावली की प्रलम्ब पर्वत श्रृंखलाएं विभिन्न प्रकार के वृक्ष, विविध पशु-पक्षी, गहरी खाइयां, कल-कल कर बहते निर्झर, बेलचालित रहट, दर्रों में हाने वाली खेती आदि मनोहर दृश्य प्रकृति के आनंद में सराबोर करने वाले रहे। प्रकृति के प्राङ्गण में होने वाली यह यात्रा कठिन होते हुए भी आह्लादायक रही।
- पूज्यप्रवर की यह यात्रा संघीय दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण और उपयोगी रही। तेरापंथ के एकादशमाधिशास्ता ने मेवाड़ के ७८ ऐसे क्षेत्रों में स्वल्पकालिक अथवा एक दिन और उससे ज्यादा प्रवास किया, जहां तेरापंथी परिवारों का निवास है। इसके अतिरिक्त अनेक ऐसे क्षेत्र भी हैं, जहां आचार्यवर का पदार्पण और संक्षिप्त उद्बोधन हुआ। श्रद्धालुओं के अतिशय उल्लास में प्रतिबिम्बित होने वाले उनके अलौकिक आनंद से प्रत्यक्ष अनुभव हुआ कि अपने परम प्रभु का समागमन भक्तों के लिए परम धन्यता की अनुभूति कराने वाला होता है। भक्तवत्सल आचार्यप्रवर ने तो कृपादृष्टि की झड़ी-सी लगा दी। कोई भी श्रद्धालु आपके दरबार से खाली हाथ नहीं लौटा। अनेक बार एक दिन में आठ से अधिक किमी. का चक्कर लेकर भी पूज्यप्रवर ने श्रद्धालुओं की भावना को तृप्त किया।
- संपूर्ण मेवाड़ यात्रा में आचार्यप्रवर ने तेरापंथ समाज और अन्य जैन परिवारों को परिवारिक सेवा का अवसर प्रदान कर उनकी सार संभाल की। इस दौरान आचार्यवर ने पारिवारिक परिचय लेने के साथ-साथ हजारों लोगों को नमस्कार महामंत्र की माला, सामायिक, नशामुक्ति आदि का संकल्प कराया और उन्हें पारिवारिक सौमनस्य बनाए रखने, अपने क्षेत्र में प्रवासित साधु-साध्वियों की दर्शन-सेवा करने, धार्मिक संस्कारों को परिपुष्ट रखने आदि की प्रेरणा प्रदान की। इस सेवा के पश्चात यदा-कदा चलने वाले जिज्ञासा-समाधान के क्रम में अनेक लोगों के मन में उठने वाले अपने प्रश्नों को भी पूज्यप्रवर से समाहित किया। पूज्यप्रवर की इस प्रकार निकट उपासना श्रद्धालुओं के जीवन की अमूल्य और अविस्मणीय थाती बन गई।
- यात्रा के दौरान पौरुष के मूर्तिमान आदर्श पुरुष महातपस्वी आचार्यप्रवर ने अधिकांश क्षेत्रों में तेरापंथ समाज और जैन समाज के प्रायः सभी घरों में चरण स्पर्श किए। अनेक बार इस कारण विहार की दूरी तीन कि.मी. से भी अधिक बढ़ गई। ऐसे भी अनेक अवसर आए, जब पूज्यप्रवर ने एक समय में सवा सौ से अधिक घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। अपने आंगन में अपने आराध्य के पादार्पण से तृप्त श्रावकों का आन्तरिक हर्षोल्लास अनिर्वचनीय होता था। उनकी आस्था का ज्वार उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता था।
- आचार्यप्रवर के प्रकृष्ट औदार्य और अहिंसा यात्रा के असाम्प्रदायिक वातावरण का प्रभाव यात्रा के

अनंतर साक्षात देखने को मिला। आचार्यप्रवर के पादार्पण से तेरापंथ समाज के स्थानीय प्रवासियों द्वारा अपना घर खोलना स्वाभाविक था। किन्तु इतर जैन अनुयायियों द्वारा अपने घर खोलना और प्रत्येक कार्य में बढ़-चढ़कर सहभागी बनना आश्चर्यकारी रहा। मेवाड़ में १० क्षेत्र तो ऐसे थे, जहां केवल अन्य जैन परिवार ही निवासित है, तेरापंथ समाज का एक भी घर वहां नहीं है। परन्तु उनके भक्तिपूर्ण उल्लास और उत्साह ने इस बात का अहसास तक नहीं होने दिया। मगरा प्रान्त के स्थानकवासी और मूर्तिपूजक बहुल क्षेत्रों में प्रथम बार सभी जैन घरों का खुलना निःसंदेह इसी बात की पुष्टि करता है।

- कुल २०६ गांवों में आचार्यप्रवर ने जनता को आध्यात्मिक पाथेय प्रदान किया। ग्रामीण अंचलों में ग्रामीणों की श्रद्धासिक्त भावना विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। पूज्यप्रवर के पदार्पण से गांव के प्रायः प्रत्येक वर्ग में नई उमंग छा जाती थी। स्वागत जुलूस और कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उनकी उत्साहपूर्ण उपस्थिति अहिंसा यात्रा की सार्थकता को परिपुष्टि प्रदान करती थी। आदिवासी अंचलों में भील, गमेती आदि समाज के लोग भी आचार्यप्रवर के दर्शन और प्रवचन श्रवण से लाभान्वित हुए और उन्होंने अपनी बुराइयों को त्यागकर स्वस्थ जीवनशैली की दिशा में प्रयाण किया। अनेक क्षेत्रों में विशाल किसान सम्मेलनों की भी समायोजना हुई। मेवाड़ की इस यात्रा में मात्र ६ क्षेत्र ऐसे थे, जहां जैन समाज का एक घर भी नहीं था।
- पूज्यप्रवर की अहिंसा यात्रा के चार आयामों में एक आयाम है नशामुक्ति। केलवा तक की इस यात्रा में आचार्यवर की प्रेरणा से प्रभावित हजारों लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। यह सब आचार्यप्रवर के करिश्माई व्यक्तित्व और स्नेहपूर्णवाणी का ही चमत्कार था। न केवल जैनेतर समाज में अपितु जैन समाज में भी यह अभियान सघनता के साथ गतिमान रहा। गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, खैनी, शराब, चिलम, गांजा, भांग आदि मादक पदार्थों के अभ्यस्त ग्रामीणों के जीवन का यह नया प्रभात था। एक देवदूत ने मानों उनके हृदय के अन्तस्तल में सदाचार रूपी ईश्वर को प्रतिष्ठापित कर दिया।
- पूरी यात्रा के दौरान पूज्यप्रवर के प्रवचन हर वर्ग के लोगों के दिल को छूने वाले होते थे। प्रवचन में सैंकड़ों-हजारों लोगों की उपस्थिति इसका स्वयंभू साक्ष्य था। आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व बहुधा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी, मंत्री मुनिश्री, मुख्य नियोजिकाजी के उद्‌बोधन हुआ करते थे। विहारों में आचार्यप्रवर के प्रवचन में पदार्पण से पूर्व समणी निर्मलप्रज्ञाजी और समणी सौम्यप्रज्ञाजी ने उपदेश का दायित्व निभाया। एक से अधिक दिनों के प्रवास में प्रायः मुनि दिनेशकुमारजी उपदेश दिया करते। कार्यक्रम के संयोजन का दायित्व मुनि मोहजीतकुमारजी और उनकी अनुपस्थिति में मुनि दिनेशकुमारजी ने संभाला।
- रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी आचार्यवर के संक्षिप्त एंव सारगर्भित उद्‌बोधन के साथ प्रेरक वाणी का अतिशय प्रभाव पड़ता। इस कार्यक्रम के संचालन का दायित्व मुनि जंबूकुमारजी ने और उनकी अनुपस्थिति में मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने निर्वहन किया। मंत्री मुनि सुमेरमलजी, मुनि विजयकुमारजी, मुनि उदितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि नीरजकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि प्रशमकुमारजी, मुनि स्वस्तिककुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि मननकुमारजी, मुनि अनंतकुमारजी, मुनि नयकुमारजी आदि अनेक संतों ने वक्तव्य, गीत आदि के माध्यम से जनता को उत्प्रेरित किया। यात्रा के दौरान आचार्यवर के इंगितानुसार स्वागत का कार्यक्रम प्रातःकालीन कार्यक्रम की अपेक्षा रात्रिकालीन कार्यक्रम में रहता। इस दौरान स्थानीय लोग अपनी आस्थासिक्त अभ्यर्थना श्रीचरणों में समर्पित करते।
- यात्रा पथ की निर्धारणा में मुनि कीर्तिकुमारजी का निष्ठापूर्ण श्रम रहा। श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट के सुझाव भी इस संदर्भ में उपयोगी रहे।
- अहिंसा यात्रा के दौरान श्री पुखराज दक, श्री नवरत्नमल बैद, श्री बाबूलाल कच्छारा, श्री रमेश

धाकड़, श्री महेन्द्र कोठारी, श्री हंसमुख भाई मेहता और श्री जतनलाल सेठिया ने मार्ग व्यवस्थापक के रूप में अपनी उल्लेखनीय सेवाएं दीं। श्री किशन डागलिया, श्री फतेहलाल मेहता, श्री जितेन्द्रकुमार मेहता, श्री सुरेश गेलड़ा, श्री विनोद कच्छारा, श्री उत्तमचन्द सुकलेचा, श्री रमेश सोनी, श्री कान्तिलाल धाकड़ आदि इस व्यवस्था में सहयोगी बने।

- पूज्यप्रवर की इस यात्रा में मार्ग सेवा करने वाले श्रद्धालुओं के नाम पूर्व में प्रकाशित किए जा चुके हैं। श्री पुखराज परमार ने सर्वाधिक दिनों तक निष्ठापूर्ण सेवा की। इनके अतिरिक्त श्री बाबूलाल कच्छारा और श्री भीखमचन्द नखत ने प्रलम्ब सेवा की। मेवाड़ यात्रा में उदयपुर तेरापंथी सभा और मुम्बई तेरापंथी सभा ने भी उपासना का लाभ लिया। अनेक श्रद्धालुओं ने अपने क्षेत्रों के परिपार्श्व की यात्रा में पूज्यवर की उपासना में स्वयं को नियोजित किया।
- मेवाड़ यात्रा में विहार के दौरान युवावर्ग ने पूज्यप्रवर की मार्ग सेवा का दायित्व निभाया। उदयपुर के अनेक युवक ८ अप्रेल से १० जुलाई तक प्रायः प्रतिदिन विहार में उपस्थित रहते, उनके लिए सवा सौ किलोमीटर से अधिक दूरी भी बाधक नहीं बनती थी। इसके अतिरिक्त भीलवाड़ा, आमेट, नाथद्वारा, केलवा, राजनगर के युवकों ने भी मार्ग सेवा का सुअवसर प्राप्त किया।

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव पर द्वितीय प्रतियोगिता

८ जुलाई। पड़ासली प्रवास के द्वितीय दिन परम पावन आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में वाद-विवाद प्रतियोगिता समायोजित हुई। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के पुनीत अवसर पर व्यक्तित्व विकास के उद्देश्य से साहित्य समिति द्वारा प्रतिमाह समायोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में इस द्वितीय प्रतियोगिता के संभागी सोलह साधु-साध्वियों ने निर्धारित विषय के पक्ष और प्रतिपक्ष में सतर्क विचार व्यक्त किए। परमपूज्य आचार्यवर ने इस संदर्भ में कहा--'वाद-विवाद प्रतियोगिता में तर्क ही मुख्य होता है। इस प्रतियोगिता के संभागियों ने अपनी तर्कशक्ति का अच्छा प्रयोग किया, यह अच्छा अभ्यास है। साधु-साध्वियों में साधना के साथ सर्वांगीण विकास होता रहे। पूज्यप्रवर ने गुरुदेव तुलसी की सन्निधि में वर्षों पूर्व समायोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में की गई अपनी संभागिता की भी स्मृति की।

मोह की सेना को जीतें

११ जुलाई। प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्वागत का अवशिष्ट कार्यक्रम चला। अनेक वक्ताओं ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। केलवा तेरापंथ महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया।

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'सेनापति का नाश होने पर सेना भी शक्तिहीन बन जाती है। इसी तरह एक मोहनीय कर्म क्षीण हो जाए तो अवशिष्ट कर्म भी शीघ्र ही समाप्त हो जाते हैं। साधक मोह कर्म के दुष्प्रभाव का चिंतन करता हुआ उसे कृश करने का प्रयास करे। मात्र राग भाव ही मोह नहीं है, क्रोध, मान, माया व लोभ भी इसका परिवार है। मोह कर्म इतना सुसज्जित व सबल है कि उसे परास्त करना आसान नहीं है। उसके लिए दृढ़ आत्मसामर्थ्य की अपेक्षा होती है।

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'मोहनीय कर्म एवं क्षयोपशम भाव-ये दो सेनाएं हैं। इन दोनों के बीच संघर्ष का नाम ही साधना है। किसी एक के प्रबल होने पर एक दुर्बल बन जाता है। साधक क्षयोपशम की साधना के द्वारा मोह की सेना पर विजय पाने का प्रयास करे।'

विश्व जनसंख्या दिवस के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'संख्या का अपना महत्व होता है। कहीं संख्या की वृद्धि उपयोगी मानी जाती है तो कहीं वह समस्या बन जाती है। हमारा संदेश है कि जितने भी मानव हैं, उनमें संयम और अहिंसा की चेतना जागृत रहे, अर्थार्जन में नैतिकता रखें।' आचार्यवर ने इस विषय में अनिच्छ, अल्पेच्छ एवं महेच्छ को परिभाषित करते हुए महेच्छ बनने से दूर रहने का आह्वान किया।'